Text Book for A.P.

Intermediate First Year

Second Language : Part-II

हिंदी

साहित्य अमृत

Hindi Text

&

कथा रश्मि

Hindi Non-Detailed

Board of Intermediate Education
Andhra Pradesh

Text Book for A.P. Intermediate First Year

Second Language : Part-II

Intermediate
First Year

Hindi
Text Book

First
May - June, 2018

ALL RIGHTS RESERVED

- No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior permission of the publisher.
- This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade, be lent, resold, hird out or otherwise disposed of without the publisher's consent, in any form of binding or cover other than that in which it is published.
- The correct price of this publication is the price printed on this page, any revised price indicated by a rubber stamp or by a sticker or by any other means is incorrect and should be unacceptable.

Printed on
70 GSM SS Maplitho Paper for Inner
200 GSM White Art Card for Title

Price: Rs. 50.00

Published by
EMESCO BOOKS Pvt. Ltd.,
33-22-2, Chandram Buildings, C.R. Road, Chuttugunta, Vijayawada -520 004.
for **Board of Intermediate Education, A.P**
Vijayawada.

Printed at:
Amaravathi Graphics, China Kakani, Guntur Dist.,

Text Book Development Committe-AP

Chief Editor

Prof. Ram Prakash
Head & BOS Chairman
Department of Hindi
S.V.University, Tirupati-517502.

Editors/ Course Writers

Dr. Velpula Mohan Rao
Asst. Prof. in Hindi
SRR & CVR Govt. Degree College (A)
Vijayawada.

Dr. R. SrinivasaRaoPatro
Asst. Prof. in Hindi
Govt. Degree & P.G. College
Narasannapeta, Srikakulam Dist.

Subject Committee Members – BIE, AP

Prof. Ram Prakash
Head & BOS Chairman
Department of Hindi
S.V.University, Tirupati-517502.

Dr. V. Mohan Rao
Asst. Prof. in Hindi
SRR & CVR Govt. Degree College (A)
Vijayawada.

Dr. M. Venkata Yerraiah
J.L. in Hindi, Govt Junior College (B)
Pakala, Chittur Dist.

M. Usha Rani
J.L. in Hindi,Govt. Junior College
Krishnalanka, Vijaywada.

A. Murali Krishana
J.L. in Hindi, Govt. Junior College (B)
Nidadavilu, West. Godavari Dist.

Dr. R. Srinivasa Rao Patro
Asst. Prof. in Hindi
Govt. Degree & P.G. College
Narasannapeta, Srikakulam Dist.

K. Subramanyam
J.L in Hindi, B R Junior College,
Punganur, Chittur Dist.

A. Sobha
J.L. in Hindi,Govt. Junior College
Parawada, Vishakhapatnam Dist.

हिन्दी पाठ्यक्रम

पद्य-भाग

			1 - 12
1.	कबीर के दोहे	(नीतिपरक उपदेश)	1
2.	रहीम के दोहे	(नीतिपरक उपदेश)	3
3.	फूल की चाह	(देशप्रेम)	5
4.	सुख-दुःख	(जीवन की पहचान)	7
5.	भिक्षुक	(भुख की पीडा)	9
6.	अकालऔरउसके बाद	(प्राकृतिक प्रकोप)	11

गद्य-भाग

			13 - 42
1.	भारतीय संस्कृति औरनारी	(संभाषण)	13
2.	शिवाजीकासच्चास्वरूप	(एकांकी)	20
3.	अथातोघुमक्कड जिज्ञासा	(यात्रावर्णन)	24
4.	पर्यावरणऔरजीवन	(निबंध)	31
5.	सी.वी. रमन	(जीवनी)	35
6.	आन्ध्र संस्कृति	(लेख)	37

हिन्दी व्याकरण

		43 - 86
1.	संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण	43
2.	काल, लिंग, वचन, कारक	56
3.	वर्तनीदोष,	70
4.	उपसर्ग, प्रत्यय, विलोम शब्द, समानार्थीशब्द	73
5.	अनुवाद	77
6.	पत्र-लेखन	81

कथा-रश्मि

			87 - 127
1.	पूस की रात	(कृषक जीवन की समस्या)	87
2.	परदा	(आर्थिक विपत्ति की दारूणता)	93
3.	चीफ की दावत	(वृद्धपीढी की उपेक्षा)	99
4.	परमात्माकाकुत्ता	(प्रशासनिक दुर्व्यवस्था)	106
5.	वापसी	(अस्मिताकापीडा)	114
6.	बदला	(भ्रष्टाचार के विरूद्धसंघर्ष)	122
	नमूनाप्रश्न-पत्र		128 - 129

कबीरदास

कवि का परिचय

कबीर का जन्म सन् 1398 ई और मृत्यु 1518 ई.में मगहर में हुई। वे जन्म से जुलाहे, काशी के निवासी तथा गुरू रामानन्द के शिष्य रहे। नीरू जुलाहा और नीमा उनके माता-पिता रहे और उनकी पत्नी का नाम लोई तथा पुत्र कमाल तथा पुत्री कमाली रही ।कबीर घुमक्कड प्रवृत्ति के सन्त रहे, उन्हें अवधी, ब्रजभाषा, खडीबोली, फारसी, अरबी, गुजराती, राजस्थानी बंगाली आदि भाषाओं का ज्ञान था।

कबीर मूलत: समाज सुधारक और मानवता पर बल देने वाले संत रहे। उन्होंने समाज में व्याप्त पाखंड, अन्धविश्वास, छूआछूत, ऊँचनीच, कुरीतियों आदि सामाजिक बुराइयों का खंडन किया।उनके रचनात्मक विषयों में ईश्वर प्रेम, गुरू महिमा, वेदान्त, जीवमात्र के प्रति दया, और प्रेम की भावनाएँ, सतगुरू, नाम, विश्वास, धैर्य, दया, विचार, औदार्य, क्षमा, संतोष आदि विषय रहे और आलोचनात्मक विषयों में माया, मन, कपट, कनक, कामिनी, भेष, कुसंग, भोगविलास, लालसा, तृष्णा इत्यादि विषयों का वर्णन मिलता है।

ग्रंथ-बीजक, रमैनी और सबद।

दोहे

1. गुरू गोविन्द दोऊ खडे, काके लागौ पॉय।
   बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताय।।

2. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजियो ग्यान।
   मोल करो तरवार का, पडी रहन दो म्यान।।

3. साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
   जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।

4. पोथि पढि-पढि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
   ढाई अक्षर प्रेम का, पढे सो पंडित होय।।

5. दु:ख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
   जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय।।

6. काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
   पल में परलै होयगी, बहुरि करोगे कब।।

कठिन शब्दार्थ

1. गोविन्द-भगवान, दोऊ-दोनों, काके-किसके, लागौपाँय-चरण स्पर्श करना, बलिहारी-बलिजाऊँ, वारी जाऊँ, आपने-आप पर, दियो-दिया, बताय-बताया ।
2. मोल-कीमत समझो, म्यान-तलवार रखने का खाचा ।
3. साँच-सच, बराबर-समान, जाके-जिसके, हिरदै-हृदय, ताके-उसके, आप-भगवान।
4. पोथी-ग्रंथ, मुआ-बीत गया, भया-बना, सो-जो, होय-हो गया।
5. सुमिरन-जाप या याद करै-करता है, कोय-कोई भी नहीं, काहे-क्यूँ, होय-होगा ।
6. सो-जो, परलै-स्वर्गवास, होयगी-हो जायेगा, बहुरि-फिर ।

भावार्थ

1. इस दोहे में कबीर दास ने गुरू के महत्व को बताते हुए गुरू की भगवान से तुलना की है और गुरू को भगवान से अधिक महत्व दिया है क्योकि गुरू भगवान को पाने का मार्ग और उसकी पहचान करवाते है । इसलिए गुरू का महत्व भगवान से अधिक मानते है ।
2. इस दोहे में कबीर दास जी ने जाति-पाँति का विरोध करते हुए साधु की पहचान उसके ज्ञान से करने का सुझाव देते है, क्योकि साधु के ज्ञान की उपेक्षा कर उसकी जाति पूछना वैसा ही है जैसे तलवार की धार को परखे बिना उसके खाँचे की सुन्दरता पर मोहित हो जाना ।
3. इस दोहे में कबीर ने सच और झूठ की पहचान करवाते हुए सच का महत्व तपस्या के समान और झूठको पाप के समान माना है।
4. इस दोहे में कबीर ने वेद पुराण और शास्त्रों के पठन द्वारा प्रदर्शित ज्ञान को खण्डित कर प्रेम के अनुभव से ही मानव को ज्ञानी होने का सुझाव दिया है।
5. इस दोहे में कबीर दास जी मानव द्वारा दु:ख में ईश्वर को याद करने और सुख में भूल जाने की प्रवृत्ति का परिचय देते है और मनुष्य को दु:खों की मुक्ति के लिए सुख में भी सुमिरण करने का सुझाव देते है ।
6. इस दोहे के माध्यम से कबीर दास जी मानव को उसके जीवन की क्षण भंगुरता से परिचित करवाते है, उनके अनुसार मनुष्य को कोई भी कार्य यथासंभव पूर्ण करना चाहिए, क्योकि मानव इस बात से अपरिचित है कि उसके पास जीवन में कितना समय बचा है।

अभ्यास प्रश्न

1. कबीरदास जी ने गुरू की महिमा कैसे दर्शायी है।
2. कबीरदास ने किससे और क्यों जाति न पूछने की बात कही है।
3. कबीरदास जी ने सच और झूठ के महत्व को कैसे बताया है।
4. कबीर की दृष्टि में प्रेम का क्या स्थान है।
5. कबीर ने ईश्वर को कब याद करने की बात कही है।
6. कबीर ने मानव जीवन की किस विशेषता का परिचय दिया है।

पूस की रात

प्रेमचन्द

कहानीकार का परिचय

प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई सन् 1880 को बनारस के निकट लमही नामक गाँव में हुआ उनका मूल नाम धनपत राय रहा । वे मैट्रिक की पढाई पूरी कर स्कूल में अध्यापक बन गये तथा कालान्तर में बी.ए.पास कर डिप्टी इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल के पद तक पहुँचे । किन्तु असहयोग आंदोलन के समय सरकारी नौकरी छोड कर कुछ समय अध्यापन करने के बाद माधुरी, जागरण, हंस जैसी पत्रिकाओं के सम्पादन और रचनात्मक लेखन में जुड रहे और सन् 1930 में निजी परिश्रम के बल पर हंस पत्रिका का सम्पादन और प्रकाशन आरम्भ किया। सन् 1936 में लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ के पहले अधिवेशन की अध्यक्षता की । आर्थिक बोझ से मुक्ति की आकांक्षा में संघर्ष करते हुए जलोदर रोग से जर्जर होकर सन् 1936 के अक्टूबर 8 को उनका देहांत हो गया।

प्रेमचन्द ने लेखन कार्य उर्दू में कहानियाँ और उपन्यास लेखन से आरम्भ किया और उनकी पहली कहानी संसार का अनमोल रत्न (1907) में जमाना में प्रकाशित हुई आरम्भ में वे उर्दू तथा विदेशी कहानीकारों का हिन्दी में अनुवाद करते रहे। जैसे-टैगोर की अनेक कहानियों का उर्दू में अनुवाद किया है वे शुरूआती लेखन में नवाबराय के नाम से उर्दू कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध हुए । उनकी उर्दू की कहानियों का संग्रह सोजेवतन (1908) में प्रकाशित हुआ और राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के कारण ये रचना प्रतिबन्धित हो गई और नवाबराय के स्थान पर प्रेमचन्द के नाम से सामाजिक कहानियों का लेखन हिन्दी में आरम्भ किया। उन्होंने लगभग दर्जन भर उपन्यास लिखे। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज और गाँव की समस्याओं तथा जीवन को केन्द्रीय विषय बनाया । विशेषत: दहेज, बेमेल विवाह, बाल विवाह, वेश्यावृत्ति, निरक्षरता, दरिद्रता, जमींदारी शोषण, अत्याचार, अन्याय,, बेगारी,महाजनी कर्ज और ब्याज का दुष्चक्र, मक्कारी, बेईमानी, धार्मिक पांखड, अस्पृश्यता, भेदभाव तथा राष्ट्रीय गुलामी इत्यादि को अपनी रचनाओं का विषय बनाया । उनके लेखन की यात्रा आदर्शवाद से होकर यथार्थवाद की ओर रही है।

प्रेमचन्द से हिन्दी कहानी का एक नया युग आरम्भ हुआ । उन्होंने मनोरंजन की शैली में कहानियाँ न लिखकर आम आदमी के जीवन संघर्ष को दर्शाते हुए सामाजिक कहानियों का लेखन आरम्भ किया। उनकी कहानियाँ चरित्र प्रधान रही है। जीवन की कठिनाईयों, कष्टों और पीडा वेदना की अभिव्यक्ति के कारण वे समाज सुधारक रूप में स्थापित हुए और उनकी कहानियों में मनुष्य के सवोच्च मानवीय पक्ष की प्रस्तुति हुई है, उनकी सुधारात्मक दृष्टि पंचपरमेश्वर, नमक का दारोगा, बडे घर की बेटी, ठाकुर का कुँआ, बूढी काकी, ईदगाह इत्यादि कहानियों में दिखाई देती है, वहीं यथार्थवादी दृष्टि का परिचय कफन, पूस की रात, सद्गति आदि कहानियों में मिलता है। उन्होंने लगभग (300) के करीब कहानियाँ लिखी है जो मानसरोवर के आठ खण्डों में संकलित है । इसतरह प्रेमचन्द का परिचय उपन्यासकार, कहानीकार के रूप में ही नहीं बल्कि निबन्धकार, सम्पादक, जीवनी लेखक, अनुवादक तथा बाल साहित्यकार के रूप में भी मिलता है।

प्रकाशित कृतियाँ

कहानियाँ-मानसरोवर (आठ भाग), प्रेमपचीसी, प्रेम द्वादशी, प्रेम तीर्थ, प्रेमपूर्णिमा, प्रेम प्रसून, नवनिधि, कफन तथा अन्य कहानियाँ आदि तथा, प्रतिनिधि कहानियाँ, सम्पूर्ण कहानियाँ आदि उपन्यास-सेवासदन, वरदान, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, प्रतिज्ञा, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र(अपूर्ण) नाटक-संग्राम, कर्बला, प्रेम की बेटी निबन्ध-कुछ विचार, साहित्य का उद्देश्य, विविध प्रसंग-1,23,

पूस की रात कहानी का परिचय

पूस की रात कहानी कृषक जीवन के कष्टों पर लिखी गई कहानी है जिसमें कहानीकार ने जाडे के दिनों में शीत लहरों का सामना करते हुए खेत की रखवाली करने वाले किसान की पीडा को दर्शाया है । इस कहानी में किसान इतना विपन्न दर्शाया गया कि उसके पास शीत से बनने के लिए कम्बल तक नहीं है, लेकिन उसे अपने खेत की रखवाली करनी है । जब नील गाएँ खेत को रौद देती है तो किसान दु:खी होने के स्थान पर इस बात के लिए संतोष करता है कि उसे जाडे में शीत लहरों का सामना करते हुए ठिठुरना तो नहीं पडेगा। अत: लेखक ने उसकी दयनीयता का सजीव चित्रण कर उसके दु:खों और कष्टों से पाठकों को परिचित करवाया है।

मूल कहानी

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा-सहना आया है । लाओ, जो रूपये रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे।

मुन्नी झाडू लगा रही थी । पीछे फिर कर बोली-तीन ही तो रूपए हैं, दे दोगे तो कम्बल कहाँ से आवेगा? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटैगी ? उससे कह दो, फसल पर दे देंगे। अभी नहीं ।

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दिशा में खडा रहा । पूस सिर पर आ गया, कम्बल बिना हार में रात को वह किसी तरह सो नहीं सकता। मगर सहना मानेगा नहीं, घुडकियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा। बला से जाडें में मरेंगे, बला तो सिर से टल जाएगी। यह सोचता हुआ वह अपना भारी-भरकम डील लिये हुए(जो उसके नाम को झूठ सिद्ध करता था)स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करके बोला-ला दे दे, गला तो छूटे! कम्बल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूँगा।

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आँखें तरेरती हुई बोली-कर चुके दूसरा उपाय! जरा सुनूँ तो कौन उपाय करोगे? कोई खैरात दे देगा कम्बल? न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकने में ही नहीं आती ! मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड देते? मर-मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई । बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है । पेट के लिए मजूर करो। ऐसी खेती से बाज आए । मैं रूपए न दूँगी - न दूँगी!

हलकू उदास होकर बोला-तो क्या गाली खाऊँ ?

मुन्नी ने तडपकर कहा-गाली क्यों देगा, क्या उसका राज हैं?

मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौंहें ढीली पढ गई। हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जन्तु की भाँति उसे घूर रहा था।

उसने जाकर आले पर से रूपए निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिए । फिर बोली- तुम छोड दो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है! मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर धौंस ।

हल्कू ने रूपये लिए और इस तरह बाहर चला, मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो। उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-काटकर तीन रूपये कम्बल के लिए जमा किए थे। वह आज निकले जा रहे थे । एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था ।

पूस की अँधेरी रात! आकाश पर तारे भी ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बाँस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढे की चादर ओढे पडा काँप रहा था । खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुँह डाले सर्दी से कूँ-कूँ कर रहा था । दो में से एक को भी नींद न आती थी।

हल्कू ने घुटनियों को गरदन में चिपकाते हुए कहा-क्यों जबरा, जाडा लगता है? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रह, तो यहाँ क्या लेने आए थे! अब खाओ ठंड, मैं क्या करूँ! जानते थे मैं यहाँ हलुआ-पूरी खाने आ रहा हूँ, दौडे-दौडे आगे-आगे चले आए। अब रोओ नानी के नाम को।

जबरा ने पडे-पडे दुम हिलाई और अपनी कूँ-कूँ को दीर्घ बनाता हुआ एक बार जम्हाई लेकर चुप हो गया। उसकी श्वान बुद्धि ने शायद ताड लिया, स्वामी को मेरी कूँ-कूँसे नींद नहीं आ रही है ।

हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा-कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह राँड पछुआ न जाने कहाँ से बरफलिये आ रही है! उठूँ फिर चिलम भरूँ । किसी तरह रात को कटे! आठ चिलम तो पी चुका । यह खेती का मजा है! और एक भगवान ऐसे पडे हैं जिनके पास जाडा जाऐं तो गरमी से घबडाकर भागे । मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ, कम्बल। मजाल है, जाडे का गुजर हो जाए । तकदीर की खूबी है ! मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें ।

हल्कू उठा, गड्ढे में से जरा-सी आग निकालकर चिलम भरी। जबरा भी उठ बैठा ।

हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा-पिएगा चिलम, जाडा तो क्या जाता है, हाँ, जरा मन बदल जाता है ।

जबरा ने उसके मुँह की ओर प्रेम से छलकती हुई आँखों से देखा ।

हल्कू-आज और जाडा खा ले । कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूँगा ।उसी में घुसकर बैठना, तब जाडा न लगेगा ।

जबरा ने अपने पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिए और उसके मुँह के पास अपना मुँह ले गया । हल्कू को उसकी गर्म साँस लगी ।

चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो अबकी सो जाऊँगा; पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कम्पन होने लगा । कभी इस करवट लेता, कभी उस करवट, पर जाडा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाए हुए था ।

जब किसी तरह न रहा गया, उसने जबरा को धीरे से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया । कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद में चिपटाए हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था । जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है, और हल्कू की पवित्र आत्मा में जो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गन्ध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता । वह अपनी दीनता से आहत न था; जिसने आज

उसे इस दशा को पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी। वह झपटकर उठा और छपरी के बाहर भूँकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुमकाकर बुलाया; पर वह उसके पास न आया। हार में चारों तरफ दौड-दौडकर भूँकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता, तो तुरंत ही फिर दौडता। कर्त्तव्य उसके हृदय में अरमान की भाँति उछल रहा था।

एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत की हवा से धधकाना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया, फिर भी ठंड कम न हुई। ऐसा जान पडता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रही है। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है! सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढे। ऊपर आ जाएँगे तब कहीं सवेरा होगा। अभी पहर से ऊपर रात है।

हल्कू के खेत से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का एक बाग था। पतझड शुरू हो गई थी। बाग में पत्तियों का ढेर लगा हुआ था। हल्कू ने सोचा, चलकर पत्तियाँ बटोरू और उन्हें जलाकर खूब तापूँ। रात को कोई मुझे पत्तियाँ बटोरते देखे तो समझे, कोई भूत है। कौन जाने, कोई जानवर ही छिपा बैठा हो; मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता।

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड लिए और उसका एक झाडू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिये बगीचे की तरफ चला। जबरा ने उसे आते देखा, पास आया और दुम हिलाने लगा।

हल्कू ने कहा-अब तो नहीं रहा जाता जबरू! चलो बगीचे में पत्तियाँ बटोरकर तापें। टाँटे हो जाएँगे, तो फिर आकर सोएँगे। अभी तो बहुत रात है।

जबरा ने कूँ-कूँ करके सहमति प्रकट की और आगे बगीचे की ओर चला।

बगीचे में खूब अँधेरा छाया हुआ था और अन्धकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बूँदें टपटप नीचे टपक रही थीं।

एकाएक एक झोंका मेहँदी के फूलों की खुशबू लिये हुए आया।

हल्कू ने कहा-कैसी अच्छी महक आई जबरू! तुम्हारी नाक में कुछ सुगन्ध आ रही है।

जबरा को कहीं जमीन पर एक हड्डी पडी मिल गई थी। उसे चिचोड रहा था।

हल्कू ने आग जमीन पर रख दी और पत्तियाँ बटोरने लगा। जरा देर में पत्तियों का ढेर लग गया। हाथ ठिठुरे जाते थे। नंगे पाँव गले जाते थे। और वह पत्तियों का पहाड खडा कर रहा था। इसी अलाव में वह ठंड को जलाकर भस्म कर देगा।

थोडी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपर वाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगी। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अन्धकार को अपने सिरों पर सँभाले हुए हों। अंधकार के उस अथाह सागर से यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पडता था।

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। आज क्षण में उसने दोहर उतारकर बगल में दबा ली, दोनों पाँव फैला दिए, मानों ठंड को ललकार रहा हो, तेरे जी में आए सो कर। ठंड की असीम शक्ति पर विजय

पाकर वह विजयगर्व को हृदय में छिपा न सकता था ।

उसने जबरा से कहा-क्यों जबरा, अब ठंड नहीं लग रही है ?

जबरा ने कूँ-कूँ करके मानो कहा-अब क्या ठंड लगती ही रहेगी ?

पहले से उपाय न सूझा, नही इतनी ठंड क्यों खाते !

जबरा ने पूँछ हिलाई ।

अच्छा, आओ, इस अलाव को कूदकर पार करें । देखें, कौन निकल जाता है। अगर जल गए बच्चा, तो मैं दबा न करूँगा ।

जबरा ने उस अग्नि-राशि की ओर कातर नेत्रों से देखा ।

मुन्नी से कल न कह देना, नहीं लडाई करेगी ?

यह कहता हुआ वह उछला और उस अलाव के ऊपर से साफनिकल गया! पैरों में जरा लपट लगी; पर वह कोई बात न थी। जबरा आग के गिर्द घूमकर उसके पास आ खडा हुआ।

हल्कू ने कहा-चलो-चलो, इसकी सही नहीं ; ऊपर से कूदकर आओ ।वह फिर कूदा और अलाव के इस पार आ गया ।

पत्तियाँ जल चुकी थी । बगीचे में फिर अँधेरा छाया था । राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाकी थी, जो हवा के झोंका आने पर जरा जाग उठती थी; पर एक क्षण में फिर आँखें बन्द कर लेती थी।

हल्कू ने फिर चादर ओढ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन में गर्मी आ गई थी; पर ज्यों-ज्यों शीत बढती जाती थी, उसे आलस्य दबाए लेता था।

जबरा जोर से भूँककर खेत की ओर भागा। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुंड उसके खेत में आया है । शायद नीलगायों का झुंड था । उनके कूदने-दौडने की आवाजें साफकान में आ रही थीं । फिर ऐसा मालूम हुआ कि खेत में चर रही हैं। उनके चबाने की आवाज चर-चर सुनाई देने लगी ।

उसने दिल में कहा कि-नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता । नोच ही डाले । मुझे भ्रम हो रहा है । कहा ! अब तो कुछ नहीं सुनाई देता । मुझे भी कैसा धोखा हुआ!

उसने जोर से आवाज लगाई-जबरा, जबरा।

जबरा भूँकता रहा। उसके पास न आया।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली । अब वह अपने को धोखा न दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना जहर लग रहा था । कैसा दँदाया हुआ बैठा था । इस जाडे-पाले में खेत में जाना, जानवरों के पीछे दौडना असह्य जान पडा । वह अपनी जगह से न हिला ।

उसने जोर से आवाज लगाई-हिलो! हिलो!हिलो!!

जबरा फिर भूँक उठा। जानवर खेत चर रहे थे । फसल तैयार है । कैसी अच्छी खेती थी; पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते हैं।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो-तीन कदम चला; पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभनेवाला बिच्छू के डंक का-सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गर्माने लगा ।

जबरा अपना गला फाडे डालता था, नीलगाएँ खेत का सफाया किए डालती थीं और हल्कू गर्म राख के पास शान्त बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भाँति उसे चारों तरफसे जकड रखा था।

उसी राख के पास गर्म जमीन पर वह चादर ओढकर सो गया।

सवेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गई थी और मुन्नी कह रही थी-क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।

हल्कू ने उठकर कहा-क्या तू खेत से होकर आ रही है ?

मुन्नी बोली-हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला, ऐसा भी कोई सोता है ! तुम्हारे यहाँ मँडैया डलने से क्या हुआ !

हल्कू ने बहाना किया-मै मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पडी है। पेट में ऐसा दरद हुआ, ऐसा दरद हुआ कि मै ही जानता हूँ।

दोनों फिर खेत के डाँड पर आए। देखा, सारा खेत रौंदा पडा हुआ है और जबरा मँडैया के नीचे चित लेटा है, मानो प्राण ही न हो।

दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छाई थी, पर हल्कू प्रसन्न था।

मुन्नी ने चिन्तित होकर कहा-अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पडेगी।

हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा-रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पडेगा।

अभ्यास

1. पूस की रात कहानी का सारांश लिखिए।
2. पूस की रात कहानी के रचनात्मक उद्देश्य का परिचय दीजिए।
3. पूस की रात कहानी से प्राप्त होने वाले संदेश को बताईए।
4. पूस की रात कहानी में किसान किन कष्टों का सामना कर रहा था।
5. पूस की रात कहानी में किसान ने किस बात की संतुष्टि की।

अनुवाद (Tranlation)

मानव के लिए भाषा, भगवान से प्राप्त अपूर्व व अद्‌भुत देन है। यह हमारे भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा के माध्यम से हम ज्ञान को संरक्षित करते हैं तथा उसे परस्पर एक दूसरे तक पहुँचाते हैं। संसार में अनेक भाषाएँ हैं। भारत में ही बाईस प्रमुख भाषाएँ है तथा तीन सौ से अधिक बोलियाँ प्रचलित हैं। विभिन्न भाषा-भाषी मानव समाज और समुदायों के बीच विचार विनिमय का माध्यम ही अनुवाद है अर्थात् किसी एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपातंरित कर देना ही अनुवाद है।

मनुष्य अपने ज्ञान और अनुभव को दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। आनेवाली पीढियाँ, वर्तमान या पुरानी पीढियों के ज्ञान से लाभान्वित होती है। इस प्रकार ज्ञान और अनुभव का निरन्तर प्रयास होता रहता है। जिज्ञासा वृत्ति मनुष्य का मूल स्वभाव है इसी ज्ञान पिपासा वृत्ति के कारण प्राचीन काल से मनुष्य भाषा, देश काल की दीवारें लाँघकर, नित नया सीखता रहा है। इस प्रक्रिया में अनुवाद ने बडी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आधुनिक युग में अनुवाद मनुष्य की सामाजिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक जरूरत के साथ कार्यलयीन कामकाज की अत्यावश्यक शर्त भी बन गया है। भाषाई स्तर पर संप्रेषण व्यापार हेतु अनुवाद एक अहम आवश्यकता के रूप में उभरकर सामने आया है। अनुवाद का प्रयोजन संकुचित कटघरे से हटकर इस वैज्ञानिक युग में बहु आयामी परिप्रेक्ष्य में उजागर हो रहा है।

अनुवाद मुख्यत: दो प्रकार के होते है - 1. साहित्य अनुवाद 2. साहित्येतर अनुवाद।

साहित्य के अन्तर्गत कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध, जीवनी, आत्मकथा, पर्यटन आदि कृत्तियाँ आती है। ऐसा अनुवाद पुन: सृजन कहलाता है।

साहित्येतर विषयों में ज्ञान-विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, इतिहास, राजनीति, वाणिज्य शास्त्र, विधि और कानून आदि अनेक विषय आते हैं। यह अनुवाद विषय प्रधान होता है। अत: यह जरूर होता है कि अनुवादक को उक्त विषय का ज्ञान हो साहित्य का उद्‌देश्य जहाँ आनन्द प्रदान करना होता है। वहीं साहित्येतर का उद्देश्य सूचना अथवा ज्ञान-प्रदान करना होता है। अत: अनुवादक का इस भेद से अवगत होना आवश्यक है। विषय के आधार पर अनुवाद के सामान्यत: निम्नलिखित भेद माने जाते हैं।

1. कार्यालयीन अनुवाद
2. वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद
3. पत्रकारिता अनुवाद
4. विधि साहित्य का अनुवाद
5. ललित साहित्य का अनुवाद
6. तकनीकी अनुवाद आदि।

अनुवाद प्रक्रिया में शब्दकोश, पर्यायवाची कोश, पारिभाषिक कोश आदि उपकरण सहायक होते हैं। अनुवादक के लिए दोनों भाषाओं के ज्ञान के साथ-साथ विषय का ज्ञान, व्याकरण का ज्ञान भी होना चाहिए, अनुवाद एक कला ही नहीं, विज्ञान भी है। सतत् अभ्यास, अनुशीलन तथा अध्ययन द्वारा अनुवाद कला में कार्य कुशलता प्राप्त की जा सकती है।

1.	प्राध्यापक	-	Lecturer
2.	अध्यापक	-	Teacher
3.	प्राचार्य	-	Principal
4.	आचार्य	-	Professor
5.	विद्यालय	-	School/Collage
6.	विश्वविद्यालय	-	University
7.	आयोग	-	Commission
8.	आयुक्त	-	Commissioner
9.	अनुदेशक	-	Instructor
10.	निरीक्षक	-	Inspector
11.	प्रधान अध्यापक	-	Head master
12.	न्यायपालिका	-	Judiciary
13.	वकील	-	Lawyer
14.	न्यायमूर्ति	-	Justice
15.	लिपिक	-	Clerk
16.	सचिव	-	Secretary
17.	कार्यालय	-	Office
18.	सर्वोच्च न्यायालय	-	Supreme Court
19.	अनुवादक	-	Translator
20.	कुलसचिव	-	Registrar
1)	Administration	-	प्रशासन
2)	Admission Test	-	प्रवेश परीक्षा
3)	Training	-	प्रशिक्षण
4)	Class	-	कक्षा, वर्ग
5)	Constitution	-	संविधान
6)	Advance	-	अग्रिम
7)	Speech	-	भाषण
8)	Seminar	-	संगोष्ठी
9)	Assembly	-	सभा
10)	Parliament	-	संसद
11)	Prime Minister	-	प्रधानमंत्री

12) Speaker - सभापति, वक्ता
13) Chair Person - अध्यक्ष,
14) Editor - सम्पादक
15) Manager - प्रबंधक
16) Cashier - रोकडिया
17) Application - आवेदन पत्र
18) Translation - अनुवाद
19) Technical - तकनीकी
20) Scientific - वैज्ञानिक
21) Arts - कला
22) Science - विज्ञान
23) History - इतिहास
24) Politics - राजनीति
25) Economics - अर्थशास्त्र
26) Chemistry - रसायन
27) Maths - गणित
28) Commerce - वाणिज्य
29) Junior Collage - माध्यमिक विद्यालय
30) Degree Collage - महाविद्यालय,
31) Dictionary - शब्दकोष
32) Work shop - कार्यशाला
33) Department - विभाग
34) Valley - घाट
35) Island - द्वीप
36) Earth Quake - भूकंप
37) Earth - पृथ्वी
38) Energy - शक्ति
39) Sound - ध्वनि, आवाज
40) Space - अंतरिक्ष
41) Physics - भौतिक
42) Light - प्रकाश, रोशनी
43) Fual - ईंधन

44) Play ground - मैदान
45) Games & Sports - खेल-कूद
46) Player - खिलाडी
47) Nation - राष्ट्र
48) Governer - राज्यपाल
49) State Government - राज्य सरकार
50) Editor - संपादक
51) Nurse - परिचालिका
52) Peon - चपरासी
53) Senior - वरिष्ठ
54) Junior - कनिष्ठ
55) Typist - टंकण
56) Eligibity - योग्यता, पात्रता
57) Award - पुरस्कार योग्यता,
58) Auditor - लेखाकार, लेखापाल
59) Accountant - खाता
60) Account Branch - शाखा